पाठ–2

सूरदास

कवि परिचय

जन्म– 1478 ई.

मृत्यु– 1663 ई.

भक्ति काव्य परम्परा में कृष्णोपासक कवियों में अग्रगण्य महाकवि सूरदास का जन्म दिल्ली के निकट 'सीही' ग्राम में हुआ था। बचपन से ही विरक्त होकर सूरदास मथुरा के निकट गऊ घाट पर रहने लगे। वहीं महाप्रभु वल्लभाचार्य द्वारा इन्हें वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित किया गया। महाप्रभु के पुत्र द्वारा स्थापित अष्टछाप में सूरदास को प्रमुख स्थान प्राप्त था। सूरदास के जन्मान्ध या बाद में अन्धे होने पर मतैक्य नहीं है। सूरदास ने वात्सल्य श्रृंगार और भक्ति विषयक काव्य रचना की है। वात्सल्य का जैसा चित्रण सूरदास ने किया है वैसा विश्व साहित्य में नहीं हुआ, कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी । इसलिए सूरदास को वात्सल्य सम्राट कहा जाता है।

सूर ने प्रेम और सौन्दर्य का प्रभावशाली वर्णन किया है। श्रृंगार के संयोग और वियोग का सर्वांग वर्णन सूर काव्य में उपलब्ध है। भक्त कवियों में सूरदास का बहुत ऊँचा स्थान है। सूर काव्य कला में मानवीय भावों का सहज रूप उस स्तर तक उठा है, जहाँ से वह लोक और परलोक प्रतिबिम्बित होता है। यह सूरदास की लोक प्रियता और महत्ता का ही प्रमाण है कि 'सूरदास' नाम किसी भी अन्धे भक्त गायक के लिए रूढ़ सा हो गया है। सूर सागर के पदों में अनेक रागिनियों का प्रयोग हुआ है। इसी कारण सूर के पद संगीतकारों में भी लोकप्रिय हैं।

कृतियाँ–

सूरसागर, साहित्य लहरी, सूर सारावली

पाठ परिचय

भक्त कवि सूरदास के 'सूर सागर' से संकलित इन पदों में श्रीकृष्ण की बाल लीला, बाल क्रीड़ा, माता का दुलार, गौ चारण आदि का स्वाभाविक चित्रण किया गया है। सूरदास के अन्धे होने के बावजूद इन पदों में सजीव से वर्णन उनके अन्तर्चक्षु की दिव्य दृष्टि का आभास होता है। माता जसोदा द्वारा श्रीकृष्ण की बाल लीला का आनन्द उठाते हुए, सुलाने की क्रिया एवं हावभाव की शाब्दिक अभिव्यंजना और अपनी प्रति छाया को पकड़ते हुए बालकृष्ण, गौ चरण के समय साथियों के उलाहने से व्यथित हो, गौ चारण से मना करने का सूरदास ने पूर्ण मनोयोग से वर्णन किया है। इन पदों से सूरदास की श्री कृष्ण के प्रति आत्मीयता का प्रत्यक्ष आभास होता है।

जसोदा हरि पालनें झुलावैं ।।
हलरावे, दुलरावै, मल्हावै, जोइ–सोइ कछु गावै ।।
मेरे लाल को आउ निंदरिया, काहे न आनि सुलावे ।
तू काहे न बेगि सी आवै, तोको कान्ह बुलावै ।
कबहुँ पलह हरि मूँदि लेत ह्वै। कबहुँ अधर फरकावै ।।
सोवत जानि मौन ह्वै रहि रहि,करि करि सैन बतावे ।।
इहि अंतर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरै गावै ।
जो सुख सूर अमर मुनि दुर्लभ, सो नँद भामिनि पावै ।

किलंकत कान्ह घुटुरूवनि आवत ।
मनिमय कनक नंद कैं आँगन, बिंब पकरिबे, धावत ।
कबहु निरखि आपु छाँह को, पकरन को चित्त चाहत ।
किलक हँसत राजत द्वै दतियाँ, पुनि–पुनि तिहिं अवगाहत ।
कनक–भूमि पर, कर–पग छाया, यह उपमा इक राजत ।
प्रति–करि प्रति पद प्रति मनि बसुधा, कमल बैठकी साजत ।
बाल–दसा–सुख निरखि जसोदा, पुनि–पुनि नन्द बुलावत ।
अँचरा तर लै ढाँकि, 'सूर' के प्रभु जननी दूध पियावति ।

मैया हौं न चरैंहों गाइ ।
सिगरे ग्वाल घिरावत मोसौं, मेरे पाइ पिराइ ।
जौ न पत्याहि पूछि बलदाउहिं, अपनी सौंह दिवाइ ।
यह सुनि माइ जसोदा ग्वालनि, गारी देति रिसाइ ।
मै पठवति अपने लरिका कौ, आवै मन बहराइ।
सूर स्याम मेरौ अति बालक, मारत ताहि रिगाइ ।

शब्दार्थ–

किलकत–किलकारी का स्वर, हलरावै–हिलाती,
सिगरे–सब, मनिमय– मणि जड़ित,
मल्हावै– झुलाती, घिरावत– इकट्ठा कराना,
कनक–सोना, बेगहि–शीघ्र,
विराइ–दर्द होना, धावत–दौड़ते ,
कबहु–कभी, पत्याहि– विश्वास,

रजत–चाँदी जैसी,	सैन–इशारा,
सौंह–सौगंध,	अवगाहत–देखते हुए,
बसुधा– धरती,	भामिनी–स्त्री,
घुटुरूवनि–घुटनों के बल चलना,	निरखि– देखकर ।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. बालकृष्ण किसे पकड़ने घुटनों पर चल उत्तेजित हो रहे हैं?

क) खिलौने ख) माखन

ग) परछाई घ) घुंघरू

2. श्री कृष्ण गाय चराने के लिए मना क्यों कर रहे हैं?

क) बलराम उनको चिढ़ाते हैं।

ख) गायें सम्भलती नहीं हैं।

ग) चारा नहीं मिल रहा है।

घ) मित्रों की गायें भी सम्भालनी पड़ती हैं।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. कृष्ण की बाल क्रीड़ा को देख यशोदा क्या करती है?
4. गाये चराने से इनकार करने का कारण जानने पर जसोदा क्या कहती है?
5. 'करि–करि सैन बतावै' इस पंक्ति से माता जसोदा का कौन सा मनोभाव अभिव्यंजित हुआ है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. 'बाल दशा सुख निरखि जसोदा' पंक्ति के आधार पर बताइए कि जसोदा ने बाल कृष्ण की कौन–कौन सी दशाएँ देखी हैं ?
7. 'जो सुख सुर अमर मुनि दुर्लभ सौ नन्द भामिनी पावै' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
8. कृष्ण को नींद आ जाए, इसलिए जशोदा क्या–क्या यत्न करती है ?
9. 'अपनी सौह दिवाई' पंक्ति से श्रीकृष्ण का कौन सा भाव अभिव्यक्त हो रहा है?

निबन्धात्मक प्रश्न

10. पठित अंश के आधार पर सूर के बाल वर्णन को रेखांकित कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तर माला

1. ग
2. घ

•••